Golden Jubilee of PINCODE

India Post, a network of 1.59 lakh post offices, spread across the length and breadth of India, is mandated to provide doorstep mail delivery to every Indian. Locating 25 crore households in an area of 32.87 lakh sq. km makes this task both challenging and exciting. It requires professional mail management and a scientific system to ensure timely deliver of mail.

In the absence of Pincode, considerable time was being consumed in collecting, sorting, transporting and delivering of the postal articles. Reading an address was a time consuming process and the sorter had to memorize a very large number of sorting patterns to route the mail to the proper destination.

The PIN (Postal Index Number) was introduced in India on August 15, 1972. It is a 6 digit code of Post Office numbering used by India Post. Each digit in the 6-digit number has a specific meaning. The first digit from left designates which is the overall geographical region, and the first 2 digits designate the postal circle or sub-region. The third digit designates the sorting district. Thus the first 3 digits collectively designate the postal district while the last 3 digits indicate the specific post office within the district. Entire country is divided into 9 PIN regions in the country.
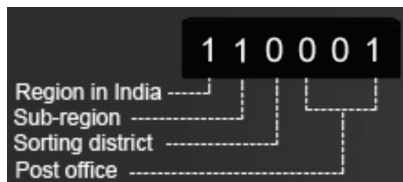
Each Pincode is mapped to one delivery post office which receives all the mail to be delivered to one or lower offices within its jurisdiction, all of which share the same code. The delivery office can either be a General Post Office (GPO), or a head office (HO), or a sub-office (SO) which are usually located in urban areas. The post from the delivery office is sorted and routed to other delivery offices for a different PIN or to one of the relevant sub-offices or branch offices for the same PIN.

PIN Code ensures speedy and accurate processing of mail. While many of the small places may not be known to the officials who sort the mail, the Pincode helps in indentifying immediately the correct routing for such mail and helps in ensuring a fast and reliable sorting and delivery. The Pincode has also simplified the sorting system for bulk mail users. In long distance transmission of mail, it cuts down the time of sorting by giving broad indications, firstly of the routing and thereafter of the details of the sorting.

Pincode simplify the delivery of mail by finishing confusion over incorrect addresses, similar place names, and different languages used by the public. Use of Pincode on mail articles and parcels ensure timely delivery even in the remotest parts of the country.

To make citizens aware about their Pincode, the department has created an online Pincode finder tool. Available on India Post website, this tool helps the users to locate the Pincode for a locality and vice versa. Users can search the Pincode of their area either by providing locality, State, and District Details or by entering Post Office Name.

Department of Posts has computerised and mechanised the entire process of mail delivery in India. The department now uses more sophisticated ways of sorting out the mail through computers. Pincode is also essential for sorting of mail through automated machines.

With the emergence of Digital Systems, the relevance and use of Pincode has extended to other government departments and private sector. MICR code being used by banks is based on the Pincode system. The cowin.gov.in platform developed for COVID vaccination has also adopted the mechanism of Pincode for booking of vaccination slots by the general public. Anyone can book the nearby vaccination centre by using the Pincode of the particular area.

Pincode is a national asset contributing to economic development. It provides readymade national geographical classification system. Businesses can plan their internal systems of sales and distribution according to the Pincode geographical classification.

Department of Posts is pleased to issue Commemorative Postage Stamp on 50 Years of Pincode and appreciates its contribution to the economic development of the Nation

Credits:

Stamp/FDC/Brochure/ Cancellation Cachet	:	Mrs Nenu Gupta
Text	:	Department of Posts

110001
110006
110011
172114
190001
380027
744104
143006
221001
273201
900056
900099
400007
524124
683574
682015
629702
393155

भारतीय डाक
India Post

डाक विभाग
Department of Posts

पिनकोड की स्वर्ण जयंती
GOLDEN JUBILEE OF PINCODE

विवरणिका BROCHURE

पिनकोड की स्वर्ण जयंती

देशभर में स्थित 1.59 लाख डाकघरों के नेटवर्क वाले भारतीय डाक को, प्रत्येक भारतीय को उसके द्वार पर मेल की सुपुर्दगी का उत्तरदायित्व सौंपा गया है। 32.87 लाख वर्ग किमी. के क्षेत्र में 25 करोड़ घरों की पहचान करना इस कार्य को चुनौतीपूर्ण और रोमांचक बनाता है। मेल की समयबद्ध सुपुर्दगी सुनिश्चित करने के लिए पेशेवर मेल प्रबंधन और वैज्ञानिक प्रणाली अनिवार्य है।

पिनकोड की शुरुआत से पूर्व, डाक वस्तुओं के संग्रहण, छंटाई, परिवहन और सुपुर्दगी में काफी समय लग जाता था। पते को पढ़ना एक समय लेने वाली प्रक्रिया थी और डाक को उचित गंतव्य स्थल तक पहुंचाने के लिए छंटाईकर्ता को अनेक छंटाई पैटर्न याद रखने पड़ते थे।

भारत में पिन (पोस्टल इंडेक्स नंबर) की शुरुआत 15 अगस्त, 1972 को हुई। पिनकोड, भारतीय डाक द्वारा डाकघरों को दिया गया 6 अंकीय कोड है। इस 6 अंकीय संख्या के प्रत्येक अंक का अपना विशिष्ट अर्थ है। बायें से पहला अंक, व्यापक भौगोलिक क्षेत्र को इंगित करता है, और पहले दो अंक, डाक सर्कल या उप–क्षेत्र को बताते हैं। तीसरा अंक, छंटाई जिले को दर्शाता है। इस प्रकार पहले 3 अंक मिलकर डाक जिले को इंगित करते हैं, जबकि अंतिम 3 अंक, उस जिले के डाकघर–विशेष को दर्शाते हैं। समस्त देश को 9 पिन क्षेत्रों में बांटा गया है।
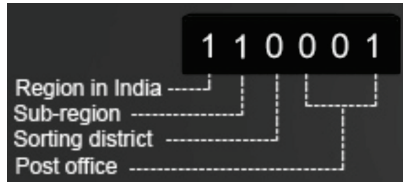
प्रत्येक पिनकोड को एक डिलिवरी डाकघर से संबद्ध किया गया है, जहां इनके क्षेत्राधिकार के अंतर्गत आने वाले उक्त डाकघर अथवा अधीनस्थ डाकघरों की समस्त मेल रिसीव की जाती हैं। सामान्यतः शहरी क्षेत्रों में स्थित जनरल पोस्ट ऑफिस (जीपीओ) या प्रधान डाकघर (एचओ) या उप डाकघर (एसओ), डिलिवरी डाकघर होता है। डिलिवरी डाकघर में प्राप्त डाक की छंटाई की जाती है और अन्य पिन के लिए प्राप्त डाक को अन्य डिलिवरी डाकघर को या उसी पिन के लिए प्राप्त डाक को संबंधित उप डाकघर या शाखा डाकघर को भेजा जाता है।

पिनकोड, मेल की त्वरित एवं सटीक प्रोसेसिंग में मदद करता है। अनेक ऐसे छोटे स्थान हैं, जिनके बारे में मेल की छंटाई करने वाले कार्मिकों को शायद जानकारी न हो परंतु पिनकोड की मदद से वे ऐसी डाक को तुरंत सही रूट पर भेजने में सक्षम होते हैं, जिससे डाक की त्वरित एवं भरोसेमंद छंटाई एवं सुपुर्दगी सुनिश्चित होती है। पिनकोड प्रणाली ने बल्क मेल भेजने वाले ग्राहकों के लिए भी छंटाई प्रणाली को सरल बनाया है। लंबी दूरी की मेल के ट्रांसमिशन में, पहले रूट के बारे में और तदोपरांत छंटाई का विवरण देकर छंटाई में लगने वाले समय को कम किया जाना संभव हो पाया है।

पिनकोड, गलत पते, किन्हीं दो स्थानों के एक ही जैसे नाम और जनता द्वारा प्रयोग की जा रही विभिन्न भाषाओं के कारण उत्पन्न होने वाले भ्रम को खत्म कर मेल की वितरण को सरल बनाता है। डाक वस्तुओं और पार्सलों पर पिनकोड का प्रयोग, देश के दूर–दराज के इलाकों में भी समयबद्ध डिलिवरी सुनिश्चित करता है।

नागरिकों को उनके पिनकोड के बारे में जागरूक बनाने के लिए विभाग ने एक ऑनलाइन पिनकोड फाइंडर टूल विकसित किया है। भारतीय डाक की वेबसाइट पर उपलब्ध यह टूल, किसी भी स्थान का पिनकोड या पिनकोड से किसी भी स्थान का नाम पता लगाने में मदद करता है। प्रयोक्ता, अपने इलाके, राज्य और जिले का विवरण देकर या अपने डाकघर का नाम दर्ज कर अपने क्षेत्र का पिनकोड पता कर सकते हैं।

डाक विभाग ने भारत में मेल डिलिवरी की पूरी प्रक्रिया को कम्प्यूटरीकृत एवं यंत्रीकृत कर दिया है। विभाग, अब कम्प्यूटरों के माध्यम से मेल छंटाई की अत्याधुनिक प्रणाली का प्रयोग कर रहा है। स्वचालित मशीनों के माध्यम से डाक छंटाई के लिए भी पिनकोड अनिवार्य है।

डिजिटल प्रणालियों के चलन के साथ, पिनकोड की प्रासंगिकता बढ़ी है और आज अन्य सरकारी विभागों एवं निजी क्षेत्रों में इसका प्रयोग होने लगा है। बैंकों द्वारा प्रयोग किया जा रहा एमआईसीआर कोड भी पिनकोड प्रणाली पर ही आधारित है। कोविड टीकाकरण के लिए विकसित cowin.gov.in प्लेटफॉर्म पर आमजन द्वारा टीकाकरण स्लॉट की बुकिंग हेतु भी पिनकोड प्रणाली को अपनाया गया है। आमजन द्वारा किसी भी क्षेत्र–विशेष के पिनकोड का प्रयोग कर आस–पास के टीकाकरण केन्द्र में टीकाकरण हेतु बुकिंग की जा सकती है।

पिनकोड प्रणाली एक ऐसी राष्ट्रीय परिसंपति है, जो देश को आर्थिक विकास की दिशा में बहुमूल्य योगदान करती है। पिनकोड, राष्ट्रीय भौगोलिक वर्गीकरण प्रणाली प्रदान करता है। व्यवसायी संगठनों द्वारा पिनकोड भौगोलिक वर्गीकरण के अनुसार, बिक्री एवं वितरण की आंतरिक प्रणाली तैयार की जा सकती है।

डाक विभाग, देश के आर्थिक विकास में पिनकोड प्रणाली के महत्व को रेखांकित करते हुए, 'पिनकोड के 50 वर्ष' विषय पर स्मारक डाक टिकट जारी करते हुए प्रसन्नता का अनुभव करता है।

आभार :

डाक टिकट / प्रथम दिवस आवरण : श्रीमती नीनू गुप्ता

विवरणिका / विरूपण कैशे

पाठ : डाक विभाग

तकनीकी आंकड़े

TECHNICAL DATA

डाक टिकट का मूल्य	: 500 पैसे
Denomination of Stamp	: 500 p
मुद्रित डाक–टिकटें	: 201600
Stamps Printed	: 201600
मुद्रण प्रक्रिया	: वेट ऑफसेट
Printing Process	: Wet Offset
मुद्रक	: प्रतिभूति मुद्रणालय, हैदराबाद
Printer	: Security Printing Press, Hyderabad

The philatelic items are available for sale at Philately Bureaus across India and online at http://www.epostoffice.gov.in/PHILATELY_3D.html

मूल्य ₹ 5.00